

# भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का योगदान

Anil Kumar\*

Teacher of JBT, GSSS Singowal, Narwana, Jind

सारांश :- भारतीय राजनीतिक मंच पर 1919 से 1948 तक महात्मा गांधी जी इस प्रकार छाए रहे कि इस युग को भारतीय इतिहास का गांधी युग कहा जाता है। 1914 में गांधी जी भारत लौट आए और अपनी सेवाओं की मान्यता के फलस्वरूप अब महात्मा कहलाने लगे। आने वाले कुछ समय तक भारतीय स्थिति का अध्ययन करते रहे। 1917 में उन्होंने बिहार के चंपारण जिले में नील के बगीचों के यूरोपीय मालिकों के विरुद्ध भारतीय मजदूरों को एकत्रित किया। 1919 की जलियांवाला बाग में हुई दुर्घटना और रोलट ऐक्ट के पारित होने पर गांधी जी बहुत खिन्न हुए और उन्होंने भारतीय राजनीति में सक्रिय भाग लेना आरंभ कर दिया। उन्होंने अंग्रेजों को 'शैतानी लोग' कहा और अपनी असहयोग की नीति अपनाई।

खिलाफत और असहयोग आंदोलन (1919-22) :- लखनऊ समझौते के परिणाम स्वरूप हिंदू- मुस्लिम एकता को बल मिला। तुर्की साम्राज्य के प्रति ब्रिटेन के व्यवहार के कारण अली बंधुओं, मौलाना आजाद, हकीम अजमल खां और हसरत मोहानी के नेतृत्व में खिलाफत कमेटी बनी और देशव्यापी आंदोलन शुरू किया गया।

महात्मा गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन को हिंदू- मुस्लिम एकता का अवसर समझा और इसका समर्थन किया रोलट ऐक्ट, जलियांवाला बाग के भीषण गोलीकांड और खिलाफत के कारण गांधी जी ने 1920 के कोलकाता अधिवेशन में सरकार से असहयोग का प्रस्ताव पारित करवाया। इसमें निर्णय लिया कि सभी सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार किया जाएगा। 1921 और 1922 में भारतीय जनता ने एक अभूतपूर्व आंदोलन किया। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई, छात्रों ने कॉलेजों को छोड़ कर विरोध प्रदर्शन किया परंतु 5 फरवरी 1922 को यूपी के चोरी चोरा नामक स्थान पर क्रुद्ध भीड़ हिंसक हो गई और 22 पुलिसकर्मी मार दिए गए। इस घटना की खबर मिलते ही गांधी जी ने आंदोलन वापस ले लिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1932-34):- गांधी जी ने नमक कानून के विरोध में 22 मार्च 1930 को अपने 78 अनुयायियों के साथ यात्रा शुरू कर दो सौ मील की दूरी तय करके 24 दिन बाद 6 अप्रैल को नमक कानून तोड़ा और सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। गांधीजी को 5 मई को गिरफ्तार कर लिया गया जिससे आंदोलन और भी भड़क गया सर तेज बहादुर सप्रू के प्रयत्नों से गांधी इरविन समझौता हुआ जिसमें कुछ समय के लिए आंदोलन स्थगित करना और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए गांधीजी से सहमत हो गई। परंतु सांप्रदायिकता के प्रश्न पर गांधीजी निराश होकर दूसरे गोलमेज सम्मेलन से वापस लौटे और पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर दिया। 1933 में गांधी जी ने अपने आंदोलन को असफल स्वीकार कर लिया और कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और वे हरिजन सेवा में लग गए।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942):- क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस कमेटी की बैठक में गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया। परंतु अगले ही दिन गांधी जी समेत तमाम आंदोलन के मुख्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इन गिरफ्तारीओं के बाद एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन शुरू हो गया। आक्रोशित लोगों ने रेलवे स्टेशन, रेल पटरी, थानों पोस्ट ऑफिस और बैंकों आदि को निशाना बनाया। यह आंदोलन भारत के स्वतंत्र होने तक चलता रहा। गांधीजी के इन जन आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

-----X-----

## भूमिका :-

मानव जाति के लिए अहिंसा के माध्यम से ही हिंसा से बाहर निकलना है। - महात्मा गांधी मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ। 1891 में उन्होंने इंग्लैंड से बैरिस्टरी पास की और पहले राजकोट में और फिर मुंबई में वकालत करने लगे। 1893 में उन्हें दक्षिण अफ्रीका की एक व्यापारिक कंपनी से निमंत्रण मिला और वहां चले गए। वहां उन्होंने रंगभेद की नीति के विरुद्ध विरोध किया। 1914 में गांधी जी भारत लौट आए और अपनी सेवाओं की मान्यता के फलस्वरूप अब महात्मा कहलाने लगे। भारतीय राजनैतिक मंच पर 1919 से 1948 तक इस प्रकार छाये रहे कि इस युग को भारतीय इतिहास का गांधी युग कहा जाता है।

## गांधी जी का सत्य और अहिंसा का संदेश :-

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को अपने सपनों की नवीन समाज का आधार बनाया। उन्होंने यंग इंडिया नामक पत्रिका में लिखा था-" जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा के सिद्धांत को खोज निकाला वे न्यूटन से अधिक प्रखर बुद्धि वाले लोग थे वह स्वयं वेलिंगटन से अधिक वीर योद्धा थे।" इस तरह से गांधी जी ने सत्य और अहिंसा को अपना प्रमुख हथियार बना लिया था। गांधी जी ने कई जन आंदोलन चलाए।

## चंपारण आंदोलन और खेड़ा सत्याग्रह :-

चंपारण जिले में नील की खेती के मालिक अंग्रेज थे। गोरे निलहे किसानों पर तरह तरह के अत्याचार कर रहे थे। वह किसानों को नील की खेती करने के लिए बाध्य करते थे। किसान अत्याचार एवं अनाचार के कारण विरोध भी नहीं कर सकते थे, क्योंकि उनकी आवाज कोई सुनने वाला नहीं था। ऐसे अवसर पर गांधी जी चंपारण पहुंचे किसानों की हालत देख कर भी बहुत दुखी हुए। उन्होंने उनकी हालत में सुधार लाने के लिए सत्याग्रह किया जिसके आगे सरकार को झुकना पड़ा और किसानों की हालत में सुधार लाना पड़ा। इस सफलता ने गांधी जी को विश्वास दिला दिया कि भारत में जनता के कष्ट का निवारण हेतु सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया जा सकता है। गांधी जी ने 1918 में दूसरा सत्याग्रह आंदोलन खेड़ा में आरंभ किया बात यह थी कि अनावृष्टि के कारण वहां की फसल मारी गई थी। किसान भूमि कर देने में असमर्थ थे। महात्मा जी ने 'कर नहीं दो' आंदोलन का नारा लगाया। महात्मा गांधी इस आंदोलन में सरदार वल्लभ भाई पटेल के निकट संपर्क में आए। गांधी जी का खेड़ा सत्याग्रह आंदोलन भी सफल रहा। उनके अनुयायियों की यह पहली विजय थी।

## खिलाफत और असहयोग आंदोलन (1919- 22):-

लखनऊ समझौता हिंदू और मुसलमानों की सामूहिक राजनीतिक कार्रवाई के लिए आधार तैयार कर चुका था। हिंदू मुस्लिम एकता के सिद्धांत की घोषणा के लिए एक कट्टर आर्य समाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद से मुसलमानों ने दिल्ली स्थित जामा मस्जिद के प्रवचन मंच से उपदेश देने के लिए आग्रह किया जबकि मुसलमान डॉक्टर किचल्लू को अमृतसर में सिखों के पवित्र स्थान स्वर्ण मन्दिर की चाबियां दे दी गईं। इसी वातावरण में मुसलमानों के बीच राष्ट्रवादी प्रवृत्ति ने खिलाफत आंदोलन का रूप ले लिया। राजनैतिक रूप से जागरूक मुसलमान तुर्की साम्राज्य के प्रति ब्रिटेन और उसके साथ संधिबद्ध राष्ट्रों के व्यवहार के आलोचक थे। जल्द ही अली बंधुओं, मौलाना आजाद, हकीम अजमल खान और हसरत मोहानी के नेतृत्व में खिलाफत कमेटी बनी। और देशव्यापी आंदोलन का आयोजन किया गया। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी ने भी खिलाफ आंदोलन को हिंदू मुस्लिम एकता को मजबूत बनाने और मुस्लिम जनता को राष्ट्रीय आंदोलन में लाने का सुनहरा मौका समझा। खिलाफत कमेटी ने 31 अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन शुरू किया। सबसे पहले उसमें गांधी जी शामिल हुए। उन्होंने अपना "कैसर ए हिंद" का पदक लौटा दिया।

रोल्ट ऐक्ट के पारित करने, जलियांवाला बाग के भीषण गोली कांड और खिलाफत के विवाद में अंग्रेजों की भूमिका से गांधी जी अत्यंत पीड़ित हुए। सितंबर 1920 में कोलकाता कांग्रेस के अधिवेशन में अन्याय सरकार के विरुद्ध असहयोग करने का प्रस्ताव पारित किया। लोगों से सरकारी शिक्षण संस्थानों, अदालतों और विधान मंडलों का बहिष्कार करने तथा खादी के उत्पादन के चरखा-तकली चलाने और हाथ करघे का अभ्यास करने को कहा गया। गांधी जी ने नागपुर में दिसंबर 1920 के वार्षिक कांग्रेस के अधिवेशन में घोषणा कि "ब्रिटिश जनता को इस बात के लिए सतर्क रहना होगा कि अगर वह न्याय करना नहीं चाहती तो प्रत्येक भारतीय का यह परम कर्तव्य होगा कि वह साम्राज्य को नष्ट कर दें।" 1921 और 1922 के दौरान भारतीय जनता का एक अभूतपूर्व आंदोलन हुआ। हजारों छात्रों ने सरकारी स्कूलों और कालेजों को छोड़कर राष्ट्रीय स्कूलों में प्रवेश लिया। सारे देश में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। खादी जल्दी ही आजादी का प्रतीक बन गया। गांधी जी को छोड़कर बाकी सारे महत्वपूर्ण राष्ट्रवादी नेता 30000 अन्य लोगों के साथ 1921 के अंत तक जेल में बंद कर दिए गए। 1 फरवरी 1922 को महात्मा गांधी ने भारत के वायसराय लार्ड रीडिंग को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने सरकार

की कठोर नीति की निंदा की एवं उसे चेतावनी दी। 5 फरवरी 1922 को यूपी के गोरखपुर जिला के चोरी चोरा में कांग्रेस और खिलाफत का एक जुलूस निकला। कुछ पुलिस वालों ने इनसे दुर्व्यवहार किया तो भीड़ हिंसक हो गई और थाने में आग लगा दी गई। इस घटना में 22 पुलिसकर्मी मारे गईं। इस घटना की खबर मिलते ही गांधी जी ने अदा आंदोलन वापस लेने की घोषणा कर दी।

### सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-31, 1932-34):-

गांधीजी 1928 में पुनः राजनीति में आ गए और उन्होंने 1930 में नमक कानून को तोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन का आह्वान किया। 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने साबरमती आश्रम से अपने 78 अनुयायियों के साथ यात्रा आरंभ की एवं 200 मील की दूरी पर 24 दिनों में यात्रा पूरी कर ली। जगह-जगह पर हजारों लोगों ने सत्याग्रही दस्ता की जय जयकार की। गांधी जी ने आत्म शुद्धि के उपरांत थोड़ा नमक उठाकर नमक कानून को भंग किया। इसके बाद 5 मई 1930 ईस्वी को गांधीजी गिरफ्तार कर लिए गए एवं उन्हें यरवदा जेल में रखा गया। गांधी जी की गिरफ्तारी ने आग में घी का काम किया और आंदोलन और तेज हो गया। 1930 में साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर विचार करने के लिए ब्रिटेन में पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें कांग्रेस ने भाग लेने से मना कर दिया। 25 फरवरी 1931 को महात्मा गांधी तथा कांग्रेस के अन्य सदस्य छोड़ दिए गए। सर तेज बहादुर शास्त्री के प्रयत्नों के कारण गांधी इरविन के बीच समझौता हुआ। इसी कारण यह गांधी इरविन पैक्ट अथवा दिल्ली पैक्ट के नाम से जाना जाता है। वायसराय ने इस बात की घोषणा कर दी कि भारतीय संवैधानिक विकास का उद्देश्य भारत को डोमिनियन स्टेटस देना है। गांधी जी ने भारतीय संवैधानिक सुधारों के लिए बुलाई गई दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया परंतु संप्रदाय के प्रश्न पर गांधीजी निराश होकर वापस लौटे और उन्होंने पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर दिया। अंग्रेजों का दमन चक्र आखिर कर सफल हो गया क्योंकि उसे सांप्रदायिक तथा अन्य सवालों पर भारतीय नेताओं के आपसी मतभेदों के कारण मदद मिली। सविनय अवज्ञा आंदोलन धीरे-धीरे क्षीण हो गया हो गया। 1933 में गांधी जी ने अपने आंदोलन की असफलता को स्वीकार कर लिया और कांग्रेस की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया और अपने आप को हरिजन की सेवा तक सीमित कर ली।

### भारत छोड़ो आंदोलन (1942):-

क्रिप्स मिशन की असफलता से सभी को निराशा हुई। अभी तक कांग्रेस ने ऐसा कोई कार्य नहीं किया था (सिवाय संविधान सभा

की मांग के) जिससे अंग्रेजों को परेशानी हो। परंतु अब जब जापान लगभग देश के द्वार पर खड़ा था। कांग्रेस चुप नहीं रह सकती थी। गांधी जी ने 10 मई 1942 की 'हरिजन' में लिखा कि भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति जापानियों को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण है। उनके जाने से यह लोभ समाप्त हो जाएगा। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक 8 अगस्त 1942 को मुंबई में हुई उसने प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया। तथा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गांधी जी के नेतृत्व में एक असहयोग करने का प्रस्ताव पास किया। उसके उपरांत गांधी जी ने 70 मिनट तक भाषण दिया और 'करो या मरो' का नारा जनता को दिया। महात्मा गांधी का यह भाषण बड़ा प्रभावशाली था। इंद्र विद्यावाचस्पति के शब्दों में गांधीजी उस दिन ऐसे बोल रहे थे मानो उनकी अंतरात्मा से भगवान बोल रहे हो। मगर कांग्रेस द्वारा आंदोलन आरंभ करने के पहले ही दिन सरकार ने जोरदार चोट की। 9 अगस्त को अत्यंत सुबह ही गांधी जी तथा कांग्रेस के अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस को एक बार फिर गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। हिंदुस्तानियों की जनता ने देश के राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के विरुद्ध जनक्रोध बिल्कुल स्वाभाविक था। जन आक्रोश के शिकार रेलवे स्टेशन, रेल पटरी, थाने, पोस्ट ऑफिस, बैंक आदि बने। लोग उन सब को नष्ट कर देना चाहते थे, जिनका संबंध अंग्रेजी राज्य से था। गांधी जी ने 15 जुलाई 1943 को एक पत्र लिखकर हिंसात्मक कार्यों के लिए सरकार को दोषी ठहराया और एक निष्पक्ष न्यायालय द्वारा इसकी जांच की मांग की। गांधी जी ने 10 फरवरी को आत्म शुद्धि के उद्देश्य से 21 दिनों के लिए एक उपवास शुरू किया। 13 दिनों के बाद गांधीजी के हालात बहुत ही नाजुक हो गईं और अंग्रेजों ने उनके दाह संस्कार की तैयारी कर ली थी। सरकार ने महसूस किया कि गांधी जी का जीवित रहना और उनकी मुक्ति, अन्दोलन को हिंसक होने से बचाने के लिये जरूरी है। इसलिये मई 1944 को गांधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया। स्वस्थ होने पर उन्होंने पुनः राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया। ये आंदोलन भारत के स्वतंत्र होने तक चलता रहा।

### गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम :-

गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने रचनात्मक कार्यक्रम को बहुत बढ़ावा दिया। वह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं चाहते थे अपितु जनता की आर्थिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति चाहते थे। इस भावना से उन्होंने "ग्राम उद्योग संघ" तालिमी संघ और गौ रक्षा संघ बनाए। उन्होंने समाज में शोषण समाप्त करने के लिए भूमि और पूंजी का

समाजीकरण नहीं मांगा अपितु आर्थिक क्षेत्र के विकेंद्रीकरण द्वारा इस प्रश्न को हल करना चाहा। उन्होंने कुटीर उद्योग के प्रोत्साहन के लिए काम किया। खादी उनके आर्थिक कार्यक्रम का प्रतीक थी। उन्होंने सभी प्रकार की असमानता (जन्म, जाति, धर्म और धन की) को समाप्त करने का प्रयास किया। गाँधी जी ने नशाबंदी के लिए और हिंदू मुस्लिम एकता के लिए भी प्रयत्न किया।

यद्यपि कुछ आलोचकों ने उन्हें एक "राजनैतिक अराजकता फैलाने वाला" कहा क्योंकि उन्होंने संवैधानिक प्रभु सत्ता को चुनौती दी और लॉर्ड लिनथीगो ने उनके दंगे को "राजनैतिक फिरौती" कहा, परंतु गांधी जी ने केवल सत्य का मार्ग ही अपनाया। उन्होंने साध्य की प्राप्ति के लिए सुख के साधनों का ही प्रयोग किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैं 300 वर्ष तक स्वतंत्रता की परीक्षा करने को उद्धत हूँ परंतु असत्य दंग नहीं अपनाऊँगा। वास्तव में यह उन्हीं के प्रयत्नों का फल था कि आंतकवाद सीमित रहा और भारत ने बिना बहुत रक्तपात के स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

Arnold toynbee - मैं जिस पीढ़ी में उत्पन्न हुआ वह पीढ़ी पश्चिम में केवल हिटलर अथवा स्टालिन की पीढ़ी नहीं थी अपितु भारत में गांधी की पीढ़ी भी थी। हम कुछ निश्चयपूर्वक यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि मानव इतिहास पर गांधी का प्रभाव हिटलर और स्टालिन के प्रभाव से अधिक चिरस्थायी होगा।

### संदर्भ सूची:-

आधुनिक भारत का इतिहास- बी एल ग़ोवर, अलका मेहता,  
यशपाल- पृष्ठ संख्या 315, 316, 317, 333

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष- विपिन चंद्र -पृष्ठ संख्या 138,  
140, 367, 368

कोलेश्वर राय का आधुनिक भारत- किताब महल ; पृष्ठ संख्या  
439, 443, 452, 461, 462, 463

आधुनिक भारत का इतिहास -शैलेंद्र सेंगर- पृष्ठ संख्या  
215,218, 228, 229

आधुनिक भारत- 12 वीं कक्षा- एनसीईआरटी-विपिन चंद्र;पृष्ठ  
संख्या 217, 218, 219, 234, 240, 241

---

**Corresponding Author**

**Anil Kumar\***

**Anil Kumar\***